eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

दक्षिण–पूर्व एशिया, चीन एवं जापान की कला–संस्कृतियों में भारती देवी सरस्वती के साक्ष्य

छाया यादव[1]
शोधार्थी, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, दी0 उ0, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर उ0प्र0

Received: 21 June 2026 Accepted & Reviewed: 25 June 2026, Published: 30 June 2026

Abstract

प्रस्तुत शोध–पत्र ''दक्षिण–पूर्व एशिया, चीन एवं जापान की कला–संस्कृतियों में भारती देवी सरस्वती के साक्ष्य'' में देवी सरस्वती के वैश्विक सांस्कृतिक प्रसार एवं उनके रूपांतरण का अध्ययन किया गया है। सरस्वती, जो ज्ञान, वाणी, संगीत एवं कला की अधिष्ठात्री देवी हैं, भारतीय परंपराओं जैसे हिंदू, बौद्ध एवं जैन में समान रूप से पूजनीय रही हैं। ऋग्वैदिक काल में नदी के रूप में प्रतिष्ठित सरस्वती, कालांतर में विद्या एवं वाक् की देवी के रूप में विकसित हुईं। व्यापार एवं बौद्ध धर्म के प्रसार के माध्यम से उनका स्वरूप दक्षिण–पूर्व एशिया, चीन एवं जापान तक पहुँचा, जहाँ वे विभिन्न नामों जैसे थुराथाडी, बिएनकाइतिआन एवं बेंजाइटन से पूजित हुईं। इस प्रकार, यह शोध दर्शाता है कि देवी सरस्वती भारतीय संस्कृति की एक ऐसी सार्वभौमिक प्रतीक हैं, जिनका प्रभाव एशिया की विभिन्न कला एवं सांस्कृतिक परंपराओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

मुख्य शब्द –देवी सरस्वती, ज्ञान एवं वाणी, कला–संस्कृति, दक्षिण–पूर्व एशिया, चीन, जापान, बौद्ध धर्म, सांस्कृतिक प्रसार, बेंजाइटन, बिएनकाइतिआन

Introduction

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में देवी सरस्वती ज्ञान, वाणी, संगीत एवं कला की अधिष्ठात्री के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वैदिक साहित्य में उनका प्रारम्भिक स्वरूप एक पवित्र नदी के रूप में मिलता है, जो कालान्तर में विद्या एवं वाक् की देवी के रूप में विकसित हुआ। विशेष तथ्य यह है कि सरस्वती की उपासना केवल हिंदू धर्म तक सीमित नहीं रही, बल्कि बौद्ध एवं जैन परम्पराओं में भी उन्हें समान रूप से उच्च स्थान प्राप्त हुआ। भारतीय उपमहाद्वीप से बाहर, विशेषतः दक्षिण–पूर्व एशिया, चीन एवं जापान की कला–संस्कृतियों में सरस्वती के विविध रूप दृष्टिगोचर होते हैं, जैसे म्यांमार की थुराथाडी, चीन की बिएनकाइतिआन एवं जापान की बेंजाइटन। इन सभी रूपों में देवी के ज्ञान, वाणी एवं संगीत से संबंधित मूल गुणों की निरन्तरता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। व्यापारिक संपर्कों एवं बौद्ध धर्म के प्रसार के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक तत्व इन क्षेत्रों तक पहुँचे, जिसके परिणामस्वरूप सरस्वती एक व्यापक एशियाई सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में स्थापित हुईं। अतः प्रस्तुत शोध–पत्र में सरस्वती के इसी सांस्कृतिक प्रसार एवं रूपांतरण का अध्ययन किया गया है।

देवी सरस्वती विभिन्न धार्मिक धाराओं में समान रूप से प्रतिष्ठित है। वैदिक साहित्य, विशेषतः ऋग्वेद में सरस्वती का उल्लेख अत्यंत महत्वपूर्ण रूप में प्राप्त होता है, जहाँ लगभग 40 से अधिक सूक्तों में उनका वर्णन मिलता है तथा 6–7 सूक्त पूर्णतः उन्हें समर्पित हैं। ऋग्वैदिक परंपरा में उन्हें ''नदियों, माताओं और देवियों में श्रेष्ठ'' कहा गया है[1], जिससे स्पष्ट होता है कि प्रारंभ में वे एक पवित्र नदी थीं, जो बाद में देवी के रूप में प्रतिष्ठित हुईं।[2] कालांतर में सरस्वती का स्वरूप बौद्ध एवं जैन परंपराओं में भी विकसित हुआ। बौद्ध साहित्य[3] में उनके 4–6 प्रमुख रूपों (महासरस्वती, वज्रवीणा आदि) का उल्लेख मिलता है, जबकि जैन

धर्म में वे 'श्रुतदेवी' के रूप में प्रतिष्ठित हैं और 5 से अधिक धार्मिक व्यवहारों में उनका वर्णन मिलता है। प्रतीकात्मक रूप से सरस्वती को सामान्यतः 'हंसवाहिनी' के रूप में दर्शाया जाता है, जो ज्ञान और विवेक का प्रतीक है, साथ ही उनके हाथों में पुस्तक, अक्षमाला एवं वीणा का धारण ज्ञान एवं कला का द्योतक है। क्षेत्रीय विविधता में कुछ परंपराओं में 'मयूर' को वाहन माना गया है, जबकि पूर्वी भारत में 'मेषवाहिनी सरस्वती' की परंपरा भी मिलती है। पश्चिम बंगाल के विभिन्न संग्रहालय में मेषवाहिनी सरस्वती मूर्तियां है, यानी सरस्वती के वाहन के रूप में एक मेष है विद्याभूषण के सरस्वती पर काम (बंगाली में) में प्राचीन बंगाल की मेसावाहिनी सरस्वती का उल्लेख है (1933: 74–75)। जे एन बनर्जी (1943: 440) मेसवाहिनी सरस्वती की एक छवि का संक्षेप में उल्लेख करते हैं। शतपथ ब्राहम्ण के अनुसार, मेढा उसका हो गया क्योंकि यह उसे इंद्र को ठीक करने के लिए देवताओं द्वारा पुरस्कार के रूप में दिया गया था।[4] यह विविधता उनके स्वरूप के सांस्कृतिक एवं क्षेत्रीय विस्तार को स्पष्ट करती है। सरस्वती को प्रारंभ में ज्ञान और बुद्धि की देवी के रूप में कल्पित किया गया। इसी कारण उनके साथ वाहन के रूप में हंस तथा करों में अक्षमाला, पुस्तक एवं कमण्डलु दिखाया गया। बाद में, ललितकलाओं विशेषकर संगीत की देवी के रूप में भी प्रतिष्ठित होने के बाद, देवी के हाथ में वीणा और वाहन के रूप में मयूर का उत्कीर्णन प्रारम्भ हुआ ।[5]

भारतीय उपमहाद्वीप में सरस्वती की उपासना का भौगोलिक विस्तार भी उल्लेखनीय है। उत्तर भारत के गुजरात, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश में उनके 4 प्रमुख क्षेत्रीय केंद्रों का उल्लेख मिलता है, जहाँ वे ब्राह्मणी या वाग्देवी के रूप में पूजित हैं। दक्षिण भारत में कर्नाटक (श्रृंगेरी), केरल (दक्षिणा मूकाम्बिका), तमिलनाडु (कूथनूर) तथा तेलंगाना (बसर एवं वारंगल) में उनके 5 से अधिक प्रमुख मंदिर स्थित हैं, जो उनकी व्यापक क्षेत्रीय उपस्थिति को प्रमाणित करते हैं। यह वितरण यह भी दर्शाता है कि सरस्वती की उपासना केवल एक धार्मिक परंपरा तक सीमित न रहकर सम्पूर्ण भारत में एक सांस्कृतिक एकता का आधार बनती है। देवी सरस्वती की सार्वभौमिक महत्ता केवल भारतीय उपमहाद्वीप तक सीमित नहीं रही, बल्कि उनका प्रभाव दक्षिण–पूर्व एशिया, चीन एवं जापान की सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराओं में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उपलब्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सरस्वती का स्वरूप एशिया के कम–से–कम 5 से अधिक प्रमुख सांस्कृतिक क्षेत्रों में विभिन्न नामों एवं रूपों में विकसित हुआ।

दक्षिण–पूर्व एशिया में सरस्वती की उपासना के विविध रूप देखने को मिलते हैं म्यांमार में उन्हें Thurathadi (थुराथाडी), थाईलैंड में surasawadi (सुरतसावाडी) के नाम से जाना जाता है। पूर्वी एशिया में उनका स्वरूप और भी विकसित रूप में सामने आता है, जहाँ जापान में Benzaiten के रूप में तथा चीन में Biancaitian (辯才天) एवं Miaoyintian (妙音天) के रूप में उनकी प्रतिष्ठा स्थापित हुई। इन सभी रूपों में एक सांस्कृतिक निरंतरता एवं वैचारिक समानता दृष्टिगोचर होती है, जो यह सिद्ध करती है कि भारतीय सरस्वती का स्वरूप इन क्षेत्रों में स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों के साथ समन्वित होकर विकसित हुआ। विशेषतः जापान की Benzaiten और चीन की Biancaitian में वैदिक सरस्वती के मूल गुण—ज्ञान, वाणी, संगीत एवं बुद्धि स्पष्ट रूप से संरक्षित हैं। यह तथ्य एक अद्वितीय सांस्कृतिक समन्वय (cultural syncretism) को दर्शाता है, जहाँ ऋग्वेद में प्रतिपादित सरस्वती की अवधारणा एशिया के

विभिन्न क्षेत्रों में समान रूप से स्वीकार की गई। इस प्रकार, सरस्वती केवल एक धार्मिक देवी न होकर ज्ञान और संस्कृति की वैश्विक प्रतीक के रूप में उभरती हैं।

	देश/क्षेत्र	**नाम**	**मुख्य विशेषता**	**समय**	**वाहन**	**वाद्य**
1	भारत	सरस्वती	ज्ञान, वाणी	वैदिक काल	हंस	वीणा
2	म्यांमार	थुराथाडी	धर्मग्रंथों की रक्षक	मध्यकाल	हिन्था	
3	थाईलैंड	सुरतसावाडी	विद्या एवं वाणी	मध्यकाल	मोर	
4	कंबोडिया	वागीश्वरी/भारती	संगीत / लेखन	7वीं–11वीं शताब्दी		
5	इंडोनेशिया	सरस्वती	शिक्षा /कला	आधुनिक		
6	चीन	बिएनकाइतिआन	वाक्पटुता	5वीं–7वीं शताब्दी		पीपा
7	जापान	बेंजाइटन	सौभाग्य / संगीत	6वीं–8वीं शताब्दी	ड्रैगन	बिवा

उपरोक्त ग्राफिक प्रस्तुति एशियाई क्षेत्रों में सरस्वती के मात्रात्मक वितरण एवं सांस्कृतिक प्रसार को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है।

म्यांमार में सरस्वती का रूप: थुराथाडी (Thurathadi) के रूप में सांस्कृतिक अनुवर्तन

म्यांमार में थुराथाडी बौद्ध पंथ की एक देवी है। उन्हे बौद्धधर्म के महायान पंथ के धर्मग्रंथों का रक्षक भी माना जाता है[6], साथ ही साथ विद्वानों और लेखकों पर विशेष आशीर्वाद बनाए रखती है।[7] म्यांमार के विधार्थी अपनी परीक्षा से पहले उनके आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करते हैं।[8] कहा जाता है कि उनकी उत्पत्ति ब्रह्मा की पत्नी हिंदू देवी सरस्वती से हुई है।[9] जो भारतीय सरस्वती के मूल स्वरूप से प्रत्यक्ष साम्य स्थापित करती हैं। म्यांमार की बौद्ध कलाओं में, उन्हें थुराथाडी (या थायेथाडी) कहा जाता है।[10] आज भी विद्यार्थियों द्वारा परीक्षा से पूर्व उनकी पूजा की परंपरा इस वैचारिक निरंतरता को स्पष्ट करती है।[11] क्योंकि वह म्यांमार के महायान संप्रदाय में उन्हें बौद्ध धर्मग्रथों की रक्षक भी माना जाता है।[12] ऐतिहासिक दृष्टि से, बागान क्षेत्र के श्वेजिगोन पगोडा के मोन शिलालेख (1084 ई.) में 'सरस्वती' का उल्लेख मिलता है, जिसमें कहा गया है कि "वाग्मिता का ज्ञान, जिसे सरस्वती कहा जाता है, सदा राजा के मुख में निवास करेगा।" यह प्रमाण दर्शाता है कि 11वीं शताब्दी तक सरस्वती की अवधारणा म्यांमार के राजकीय एवं धार्मिक विमर्श का अंग बन चुकी थी। प्रतिमा–विज्ञान की दृष्टि से थुराथाडी को प्रायः 'हिन्था' (हंस के समान पक्षी) पर आरूढ़

दर्शाया जाता है, जो 'हंसवाहिनी सरस्वती' से स्पष्ट समानता स्थापित करता है। म्यांमार की 'नट' परंपरा में भी उन्हें महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, जहाँ वे एक प्राचीन एवं प्रमुख देवता मानी जाती हैं। इस प्रकार, थुराथाडी का स्वरूप भारतीय सरस्वती की अवधारणा के स्थानीय बौद्ध एवं लोक परंपराओं के साथ समन्वित सांस्कृतिक रूपांतरण का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

थाईलैंड में सरस्वती (Surasawadi) का स्वरूप–

दक्षिण–पूर्व एशिया में सरस्वती के सांस्कृतिक प्रसार का एक महत्वपूर्ण केंद्र थाईलैंड है, जहाँ उन्हें 'Surasawadi' (सुरतसावाड़ी) के नाम से जाना जाता है।13 ऐतिहासिक थाई साहित्य एवं धार्मिक परंपराओं में सरस्वती को विद्या, वाणी एवं ज्ञान की देवी तथा ब्रह्मा की सहधर्मिणी के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। यह स्वरूप भारतीय ब्राह्मणिक परंपरा से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित प्रतीत होता है।

समय के साथ थाईलैंड की धार्मिक संरचना में हिंदू एवं बौद्ध अवधारणाओं का गहन समन्वय (religious syncretism) हुआ, जिसके परिणामस्वरूप सरस्वती का स्वरूप भी मिश्रित धार्मिक संदर्भों में विकसित हुआ। उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार, थाईलैंड के प्राचीन 'वाट' (मंदिरों) में भारतीय देवताओं के साथ सरस्वती के प्रतीकात्मक चित्र एवं मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं[14], जो यह संकेत देती हैं कि उनकी उपासना कम–से–कम कई प्रमुख धार्मिक केंद्रों में प्रचलित थी। प्रतिमा–विज्ञान की दृष्टि से भी सरस्वती का स्वरूप यहाँ विशिष्ट है। थाई परंपरा में सरस्वती से संबंधित ताबीज (mulet) प्राप्त होते हैं, जिनमें उन्हें 'मोर' (peacock) के साथ दर्शाया गया है। यह विशेषता भारतीय परंपरा के उत्तरवर्ती स्वरूप से मेल खाती है, जहाँ सरस्वती को ललित कलाओं विशेषतः संगीत की देवी के रूप में विकसित होने के पश्चात् 'मयूरवाहिनी' रूप में भी चित्रित किया गया। इस प्रकार, थाईलैंड में सरस्वती का स्वरूप भारतीय मूल तत्वों एवं स्थानीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का एक समन्वित रूप प्रस्तुत करता है।

कंबोडिया में सरस्वतीः शिलालेखीय एवं साहित्यिक साक्ष्य

कंबोडिया में सरस्वती की उपासना के प्रमाण मुख्यतः शिलालेखीय एवं साहित्यिक स्रोतों से प्राप्त होते हैं, जो विशेषतः 7वीं से 11वीं शताब्दी के मध्य उनके प्रभाव को दर्शाते हैं। अंगकोर कालीन कंबोडिया के एक शिलालेख (10वीं–11वीं शताब्दी) से ज्ञात होता है[15] कि सरस्वती को विधिवत् आह्वान के साथ सम्मानित किया जाता था, जो उनके संगठित धार्मिक पूजन की ओर संकेत करता है। कंबोडियन पुरालेखों में सरस्वती तथा ब्रह्मा दोनों का उल्लेख मिलता है, किन्तु यह उल्लेखनीय है कि अनेक संदर्भों में सरस्वती को उनके पति ब्रह्मा की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया गया है। यह तथ्य उनके स्वतंत्र दैवी स्वरूप एवं विशेषतः ज्ञान एवं वाणी की अधिष्ठात्री देवी के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को दर्शाता है। खमेर साहित्यिक परंपरा में सरस्वती को वाक्पटुता, लेखन एवं संगीत की देवी के रूप में अत्यधिक सम्मान प्राप्त है। यशोवर्मन कालीन साहित्य में उन्हें 'वागीश्वरी' तथा 'भारती' जैसे नामों से संबोधित किया गया है[16], जो भारतीय वैदिक एवं उत्तरवैदिक परंपराओं से प्रत्यक्ष समानता स्थापित करते हैं। यह नामावलियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि सरस्वती का स्वरूप केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि साहित्यिक एवं बौद्धिक जीवन का भी अभिन्न अंग बन चुका था। इस प्रकार, कंबोडिया में सरस्वती की उपस्थिति न केवल शिलालेखीय प्रमाणों द्वारा पुष्ट होती है, बल्कि यह भी स्पष्ट करती है कि भारतीय ज्ञान–परंपरा एवं देवी–उपासना का प्रभाव दक्षिण–पूर्व एशिया

में गहराई तक व्याप्त था। यहाँ सरस्वती का स्वरूप एक ऐसी सांस्कृतिक सेतु के रूप में उभरता है, जो भारतीय एवं खमेर सभ्यताओं के बीच बौद्धिक एवं धार्मिक आदान–प्रदान को दर्शाता है।

इंडोनेशिया (बाली) में सरस्वती: मंदिर, उत्सव एवं सांस्कृतिक परंपरा– दक्षिण–पूर्व एशिया में देवी सरस्वती की उपासना का एक सशक्त एवं जीवंत रूप इंडोनेशिया, विशेषतः बाली द्वीप में देखने को मिलता है। यहाँ सरस्वती शिक्षा, साहित्य, कला एवं सांस्कृतिक जीवन की केंद्रीय प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित हैं तथा उनका स्वरूप भारतीय परंपरा से अत्यंत साम्य रखता है।

इंडोनेशिया में सरस्वती उपासना का प्रमुख केंद्र पुरा तमन सरस्वती मंदिर है, जो अपने भव्य स्थापत्य एवं कमल–तालाब के लिए प्रसिद्ध है।[17] इसका निर्माण 1951–1952 ई. में हुआ तथा यह बाली की पारंपरिक वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है।[18] बाली की परंपरा में 'सरस्वती दिवस' (ट्रूावद कैलेंडर) विशेष महत्व रखता है, जो ज्ञान एवं विद्या की देवी को समर्पित है। इस दिन श्रद्धालु ग्रंथों की पूजा करते हैं, किंतु पुस्तकों का अध्ययन वर्जित माना जाता है, जो ज्ञान के प्रति सम्मान का प्रतीक है। इसके पश्चात् 'बन्यु पिनरुह' अनुष्ठान में स्नान द्वारा आध्यात्मिक शुद्धि प्राप्त की जाती है। सांस्कृतिक स्तर पर, नृत्य एवं नाट्य परंपराएँ जैसे झमबां क्ंदबम भी सरस्वती से संबंधित धार्मिक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को सुदृढ़ करती हैं।वातुगुनंग, पावुकोन कैलेंडर का अंतिम दिन, विद्या की देवी सरस्वती को समर्पित है। हालाँकि यह किताबों को समर्पित है, लेकिन पढ़ने की अनुमति नहीं है। वर्ष के चौथे दिन को पेजरवेसी कहा जाता है, जिसका अर्थ है ष्लोहे की बाडष। यह अच्छाई और बुराई के बीच लड़ाई की याद दिलाता है।[19] बाली हिंदू धर्म मे सरस्वती एक महत्वपूर्ण देवी है। वह भारत के हिंदू साहित्य में सरस्वती के समान गुण और प्रतिगा साझा करती है दोनों जगहों पर, वह ज्ञान, रचनात्मक कला, ज्ञान, भाषा, शिक्षा और पवित्रता की देवी हैं।[20] बाली में, सरस्वती दिवस मनाया जाता है, जो इंडोनेशिया में हिंदुओं के मुख्य त्योहारों में से एक है।[21,22] यह दिन पावुकोन कैलेंडर में 210 दिन वाले वर्ष के समापन का प्रतीक है।[23] तुलनात्मक रूप से, बाली में सरस्वती का स्वरूप भारतीय परंपरा के अत्यंत निकट है, जहाँ उन्हें ज्ञान, वाणी, कला एवं पवित्रता की देवी के रूप में समान रूप से स्वीकार किया गया है। यह दर्शाता है कि भारतीय सांस्कृतिक अवधारणाएँ स्थानीय परंपराओं के साथ समन्वित होकर एक जीवंत एवं सतत् सांस्कृतिक धारा के रूप में विकसित हुईं।

सरस्वती दिवस पर, लोग मंदिरों और पवित्र ग्रंथों में फूलों के रूप में प्रसाद चढ़ाते हैं। इसके अगले दिन सरस्वती दिवस है बन्यु पिनरुह, सफाई का दिन है। इस दिन, बाली के हिंदू समुद्र, पवित्र झरनों या नदी स्थलों पर जाते हैं, सरस्वती की पूजा करते हैं और फिर सुबह उस पानी से कुल्ला करते हैं। फिर वे एक दावत तैयार करते हैं, जैसे कि पारंपरिक बेबेक बेटुटु और नासी कुनिंग, जिसे वे साझा करते है।[24] बाली में सरस्वती दिवस उत्सव का एक लंबा इतिहास है।[25] हाल के दशकों में यह इंडोनेशिया के हिंदू समुदाय में अधिक व्यापक हो गया है, और इसे थिएटर और नृत्य प्रदर्शन के साथ मनाया जाता है।[26]

जापान में सरस्वती का रूपांतरण: बेंजाइटन (Benzaiten) के रूप में धार्मिक एवं सांस्कृतिक समन्वय– पूर्वी एशिया में देवी सरस्वती का सर्वाधिक विकसित रूप जापान में 'बेंजाइटन' (ठमदर्रंपजमद) के रूप में प्राप्त होता है, जो भारतीय, चीनी एवं जापानी परंपराओं के त्रिस्तरीय सांस्कृतिक समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है। ऐतिहासिक रूप से उनका आगमन 6वींदृ8वीं शताब्दी के मध्य बौद्ध धर्म के माध्यम से चीन से जापान हुआ।[27] Golden Light Sutra एवं Lotus Sutra में उनका उल्लेख ज्ञान, वाणी एवं कला की

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

देवी के रूप में मिलता है। जापान में बेंजाइटन का स्वरूप बहुआयामी है वे एक ओर संगीत एवं कला की देवी हैं, जिन्हें 'बिवा' (जापानी वीणा) के साथ चित्रित किया जाता है, वहीं दूसरी ओर वे प्रेम, सौभाग्य एवं समृद्धि की देवी भी हैं। इसी कारण वे 'Seven Lucky Gods' में सम्मिलित होकर अत्यंत लोकप्रिय हुईं और उनकी उपासना अभिजात वर्ग से लेकर सामान्य जन तक व्यापक रूप से फैल गई। धार्मिक समन्वय की दृष्टि से बेंजाइटन बौद्ध धर्म के साथ–साथ शिंतो परंपरा के 'कामी' से भी जुड़ गईं, तथा उनका संबंध जल, नदियों एवं द्वीपों से स्थापित हुआ, जो उनके मूल 'नदी–देवी' स्वरूप की निरंतरता को दर्शाता है। वह एक लोकप्रिय शहरी देवी भी बन गई, खासकर दरबारी संगीतकारों और दरबारियों के बीच। वह पूरे जापान में कई स्थानों पर प्रतिष्ठित हैं, जैसे कि कामाकुरा के जेनियाराई बेंजाइटेन उगाफुकु तीर्थ या नागोया के कवाहरा तीर्थ[28] उनके सम्मान में जापान में तीन सबसे बड़े मंदिर सागामी खाड़ी में एनोशिमा द्वीप, बिवा झील में चिकुबू द्वीप और सेटो अंतर्देशीय सागर में इत्सुकुशिमा द्वीप में है। उनके प्रमुख तीर्थस्थल एनोशिमा द्वीप, चिकुबु द्वीप एवं इत्सुकुशिमा द्वीप उनके व्यापक भौगोलिक प्रसार को स्पष्ट करते हैं।

प्रतिमा–विज्ञान की दृष्टि से, जहाँ भारतीय सरस्वती 'हंसवाहिनी' हैं, वहीं जापान में बेंजाइटन को प्रायः श्वेत ड्रैगन या सर्प से संबद्ध दिखाया जाता है। कुछ रूपों में वे आठ भुजाओं वाली रक्षिका देवी के रूप में भी चित्रित होती हैं। तुलनात्मक रूप से, दोनों के मध्य ज्ञान, वाणी, संगीत एवं पवित्रता जैसे मूल तत्व समान बने रहते हैं, जो यह सिद्ध करता है कि सांस्कृतिक रूपांतरण के बावजूद दार्शनिक आधार संरक्षित रहा। इस प्रकार, बेंजाइटन का स्वरूप भारतीय सरस्वती की वैश्विक सांस्कृतिक निरंतरता का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करता है।

चीन में सरस्वती का स्वरूप: बिएनकाइतिआन (Biancaitian) एवं मिआओयिन्तिआन (Miaoyintian) के रूप में बौद्ध समन्वय – पूर्वी एशिया में देवी सरस्वती का एक महत्वपूर्ण रूप चीन में विकसित हुआ, जहाँ उन्हें मुख्यतः ठपंदबंपजपंद (辯才天½ तथा डपंवलपदजपंद (妙音天½ के नाम से जाना जाता है। 'ठपंदबंपजपंद' का शाब्दिक अर्थ "वाक्पटुता की देवी[29]" (Goddess of Eloquence) तथा 'Miaoyintian' का अर्थ मधुर या दिव्य ध्वनियों की देवी[30] है। ये नाम स्वयं इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि चीन में सरस्वती का स्वरूप मुख्यतः ज्ञान, वाणी, संगीत एवं बौद्धिक क्षमता के प्रतीक के रूप में विकसित हुआ।[31] चीन में सरस्वती की उपासना का प्रसार मुख्यतः बौद्ध धर्म के माध्यम से हुआ, जो भारतीय उपमहाद्वीप से होते हुए मध्य एशिया और फिर चीन तक पहुँचा। विशेषतः Golden Light Sutra (सुवर्णप्रभा सूत्र) में सरस्वती के स्वरूप का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इस ग्रंथ के अनुसार, जो व्यक्ति इस सूत्र का प्रचार या पाठ करता है, उसे देवी का संरक्षण प्राप्त होता है, साथ ही उसे ज्ञान, निर्बाध वाक्पटुता एवं आध्यात्मिक उन्नति की प्राप्ति होती है।[32] यह धारणा सरस्वती को केवल एक देवी न मानकर एक 'आध्यात्मिक शक्ति' के रूप में स्थापित करती है।

धार्मिक संरचना के स्तर पर, चीनी बौद्ध परंपरा में सरस्वती को '24 रक्षक देवताओं' (protective deities) में से एक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। यह तथ्य उनके संस्थागत (institutional) महत्व को दर्शाता है, जहाँ वे बौद्ध धर्म की रक्षा एवं उसके प्रचार–प्रसार में सहायक दैवी शक्ति के रूप में मानी जाती हैं। प्रतिमा–विज्ञान (iconography) की दृष्टि से चीन में सरस्वती का स्वरूप बहुविध है। एक ओर,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

उन्हें आठ भुजाओं के साथ चित्रित किया गया है, जिनमें वे विभिन्न अस्त्र–शस्त्र—धनुष, बाण, चक्र, भाला, कुल्हाड़ी आदिकृधारण करती हैं, जो उन्हें एक शक्तिशाली रक्षिका देवी के रूप में प्रस्तुत करता है। दूसरी ओर, एक अत्यंत लोकप्रिय स्वरूप में उन्हें 'पीपा' (pipa) एक पारंपरिक चीनी तार वाद्यकृबजाते हुए दर्शाया गया है।[33] यह स्वरूप भारतीय सरस्वती की वीणा के साथ स्पष्ट समानता स्थापित करता है, जिससे संगीत एवं कला के क्षेत्र में उनकी निरंतरता सिद्ध होती है।

सांस्कृतिक दृष्टि से यह उल्लेखनीय है कि चीन में सरस्वती का स्वरूप भारतीय मूल तत्वों को संरक्षित रखते हुए स्थानीय बौद्ध एवं चीनी सांस्कृतिक संदर्भों के साथ समन्वित हुआ। यह समन्वय इस बात का प्रमाण है कि भारतीय ज्ञान–परंपरा केवल स्थानांतरित नहीं हुई, बल्कि उसने स्थानीय सभ्यताओं के साथ संवाद स्थापित कर एक नवीन, किंतु मूलतः समान दार्शनिक स्वरूप धारण किया।

निष्कर्ष – उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि देवी सरस्वती का स्वरूप भारतीय सांस्कृतिक परंपरा तक सीमित न रहकर एक व्यापक अंतर–सांस्कृतिक (trans-cultural) एवं बहुआयामी वैश्विक रूप में विकसित हुआ है। ऋग्वेद में एक पवित्र नदी एवं दैवी शक्ति के रूप में प्रारंभ हुआ उनका स्वरूप कालांतर में ज्ञान, वाणी, संगीत एवं विद्या की अधिष्ठात्री देवी के रूप में स्थापित हुआ, जिसने विभिन्न धार्मिक परंपराओं हिंदू, बौद्ध एवं जैनकृमें समान रूप से स्थान प्राप्त किया। दक्षिण–पूर्व एवं पूर्वी एशिया के विभिन्न क्षेत्रों जैसे थाईलैंड, कंबोडिया, म्यांमार, इंडोनेशिया तथा जापानकृमें सरस्वती के विविध रूप (जैसे सुरतसावाड़ी, थुराथाडी, बेंजाइटन आदि) यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय धार्मिक अवधारणाएँ केवल स्थानांतरित नहीं हुईं, बल्कि स्थानीय सांस्कृतिक, धार्मिक एवं लोक–परंपराओं के साथ समन्वित होकर नवीन रूपों में विकसित हुईं। विशेष रूप से चीन के माध्यम से बौद्ध धर्म के प्रसार ने इस सांस्कृतिक रूपांतरण में सेतु की भूमिका निभाई। तुलनात्मक दृष्टि से यह स्पष्ट होता है कि भले ही विभिन्न क्षेत्रों में सरस्वती के रूप, नाम, वाहन एवं प्रतीकात्मक स्वरूप में परिवर्तन हुआ हो, किन्तु उनके मूल तत्त्व ज्ञान, वाणी, संगीत, पवित्रता एवं रचनात्मकता सर्वत्र समान रूप से संरक्षित रहे। यह सांस्कृतिक निरंतरता इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित दार्शनिक आधार अत्यंत सशक्त एवं अनुकूलनशील (daptive) रहा है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि देवी सरस्वती का वैश्विक स्वरूप केवल एक धार्मिक अवधारणा नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक सेतु (cultural bridge) है, जिसने विभिन्न सभ्यताओं को ज्ञान, कला एवं आध्यात्मिकता के माध्यम से जोड़ा है। यह अध्ययन न केवल भारतीय संस्कृति की प्राचीनता एवं व्यापकता को रेखांकित करता है, बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि भारत ने विश्व को ज्ञान, साहित्य एवं सांस्कृतिक समन्वय की दिशा में एक स्थायी एवं प्रभावशाली योगदान प्रदान किया है जिससे 'विश्वगुरु' की अवधारणा भी सार्थक सिद्ध होती है।

संदर्भ सूची–

1.पौराणिक गाथाश्रों के अनुसार सरस्वती राजस्थान की एक प्राचीन सरिता का नाम है जो कि अब पूर्णतया यहाँ के रेत से भर
चुकी है, परन्तु जिसके तट पर वैदिक आर्यों ने वैदिक मंत्रों की रचना की थी। यही सरस्वती सरिता कालान्तर में विद्या की
देवी के रूप में परिवर्तित हो गई। इसी बात को प्रदर्शित करने के लिए अलौरा में उन्हें गंगा एवं यमुना के साथ खड़ा

प्रदर्शित किया गया है
2.जैन प्रतिमाएं, डॉक्टर ब्रजेंद्र नाथ शर्मा, सरस्वती प्रतिमाओं के विकास में पल्लू की जैन सरस्वती – प्रतिमाएं पृष्ठ नं. 10।
3. ब्रजेंद्र नाथ शर्मा, श्बौद्ध साहित्य की रूपरेखाश 'मधुमती', उदयपुर, जनवरी, 1662, पृ० 62।
4.शतपथ ब्राह्मण के... 7वें अध्याय, कांडा XII पहले ब्राह्मण से, यह संबंधित है
5.मध्यकालीन भारतीय प्रतिमा लक्षण ,डॉक्टर मारुति नंदन तिवारी ,डॉक्टर कमल गिरी– अध्याय शक्ति या देवी प्रतिमा, पृष्ठ
–१४३
6.सिल्वरस्टीन, जोसेफ (1989)। चालीस वर्षों में स्वतंत्र बर्मा। मोनोग्राफ दक्षिण पूर्व एशिया कार्यक्रम। 4. कॉर्नेल विश्वविद्यालय. पी। 55. आईएसबीएन 978–0877271215
7.क्यू, ऐनी–मे (2005)। पो विन ताउंग के गुफा मंदिर, मध्य बर्माः वास्तुकला, वास्तुकला और चित्र । व्हाइट लोटस प्रेस। आईएसबीएन 978–974–480–045–9.
8.सीकिंस, डोनाल्ड (2006)। बर्मा के ऐतिहासिक शब्दकोश (म्यांमार) । आईएसबीएन 978–0810854765.
9. "बीजी 1899" ,tuninst-net
10.डोनाल्ड सीकिंस (2006), हिस्टोरिकल डिक्शनरी ऑफ बर्मा (म्यांमार), <templatestyles src='मॉड्यूलः उद्धरण/CS1/styles-css' />आईएसबीएन 978–0810854765
11.डोनाल्ड सीकिंस (2006), हिस्टोरिकल डिक्शनरी ऑफ बर्मा (म्यांमार), <templatestyles src='मॉड्यूलः उद्धरण/CS1/styles-css' />आईएसबीएन 978–0810854765
12.जोसेफ सिल्वरस्टीन (1989), इंडिपेंडेंट बर्मा एट फोर्टी इयर्स, मोनोग्राफ साउथईस्ट एशिया प्रोग्राम का खंड 4, कॉर्नेल यूनिवर्सिटी, <templatestyles src="Module:Cation/CS1/styles-css" /> आईएसबीएन 978– 0877271215, पृष्ठ
55
13.थान टुन (दिसंबर 1976)। ष्बर्मा की सरस्वतीष (पीडीएफ) । दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन । 14 (3): 433–441। 4 दिसंबर
2014 को मूल (पीडीएफ) से संग्रहीत।
14.मैकफारलैंड, जॉर्ज (1944)। थाई–अंग्रेजी शब्दकोश। पी. 790. आईएसबीएन 9780804703833. https://books-google-
com/books?id=h3lb3jZaYI4C&pg=PA790 ।
15.मौलिक कहानियाँ, 213
16.पतित पबन मिश्रा (2010)। विद्यार्थी का इतिहास. आईएसबीएन 978–0313340918।
17.वोल्टर्स, ओडब्लू (1989)। दक्षिण पूर्व एशियाई दार्शनिक इतिहास, संस्कृति और क्षेत्र। पी.एच.पी. 87–89. आईएसबीएन 978–9971902421।
18.वोल्टर्स, ओडब्लू (1989)। दक्षिण पूर्व एशियाई दार्शनिक इतिहास, संस्कृति और क्षेत्र। पी.एच.पी. 87–89. आईएसबीएन 978–9971902421।
19.एल कार्तजया 2009, पृ. 66.
20.लुडविक, कैथरीन (2001)। सरस्वती से बेनजाइटन तक (पीडीएफ) (पीएचडी)। टोरंटो विश्वविद्यालयः कनाडा का राष्ट्रीय पुस्तकालय। 11 सितंबर 2014 को मूल (पीडीएफ डाउनलोड) से संग्रहीत ।
21.सुजुकी, टी. (1907)। "आनंद के सात देवता"। खुला न्यायालय 7(2). http://opensiuc-lib-siu-edu/cgi/viewcontent-cgi?article=2130&conteÛt=ocj ।
22.एल कार्तजया 2009, पृ. 66.

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

23.आइजमैन (1989) पीपी 184–185
24."सरस्वती, ज्ञान अवतरण का दिन"। बाली टाइम्स। 2013. http://www-thebalitimes-com/2013/01/14/sarasmati&day&of&knowledge&descent/ ।
25.क्यूरेटर द्वारा लिखित,हिस्ट्रीऑफइंडिया.कॉम
26.पांडे, जीसी. दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत की सहभागिता। 1. पृ. 660–661. आईएसबीएन 978–8187586241।
27.जुर्बुचेन, मैरी सबाइन (2014)। बालिनीज शैडो थिएटर की भाषा। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 49–57. आईएसबीएन 978–0691608129।
28.क्रुगर, विविएन (22 अप्रैल 2014)। बाली खाना: बाली का पारंपरिक व्यंजन और खाद्य संस्कृति। पृ. 152–153. आईएसबीएन
978–0804844505।
29.गोंडा, जनवरी। "धारा 3: दक्षिणपूर्व एशिया धर्म"। प्राच्य अध्ययन की पुस्तिका। ब्रिल अकादमिक. पी। 45. आईएसबीएन 978–9004043305.
30.जुर्बुचेन, मैरी सबाइन (2014)। बालिनीज शैडो थिएटर की भाषा। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 49–57. आईएसबीएन 978–0691608129।
31.बौद्ध धर्म के चौबीस स्वर्ग, रिलीज समय: 2008–03–07 सूचना स्रोत: चीन बौद्ध संस्कृति नेटवर्क क्लिक की संख्या: 1154"佛教二十四诸天ऋ中国佛教文化网"। 2016–03–04.https://web-archiveorg/web/20160304090051/http://wh-zgfj-cn/ChangShi/2010&09&01/4595-html ।
32.बौद्ध धर्म के चौबीस स्वर्ग, रिलीज समय: 2008–03–07 सूचना स्रोत: चीन बौद्ध संस्कृति नेटवर्क क्लिक की संख्या: 1154

http://buddhaspaceorg/dict/fk/data/%25E8%25BE%25AF%25E6%2589%258D%25E5%25A4%
25A9-html ।
33. सूचना स्रोत: चीन बौद्ध संस्कृति नेटवर्क क्लिक की संख्या: 1154